संदेश दो

दुल्हन का निर्माण करना

पवित्रशास्त्र पठन: उत. 1:26; 2:7-10, 18-25; प्रक. 19:7-9; 21:9-11

I. परमेश्वर का भवन सम्पूर्ण बाइबल में केन्द्रीय विषय है; मसीह की दुल्हन त्रिएक परमेश्वर का भवन है—"और यहोवा परमेश्वर ने उस पसली को जो उसने आदम में से निकाली थी, स्त्री बना दिया; और उसको आदम के पास ले आया"—उत. 2:22:

A. सम्पूर्ण बाइबल की तुलना एक भवन नियमावली से की जा सकती है; अदन वाटिका के प्रकाशन के विषय में, जो पवित्रशास्त्र में दिव्य प्रकाशन की शुरूआत है, और नए यरूशलेम के विषय में प्रकाशन, जो पवित्रशास्त्र में दिव्य प्रकाशन की समाप्ति है, एक दूसरे को प्रतिबिंबित करती है।

B. पवित्रशास्त्र के इन दो भागों में जो प्रकट किया गया है वह परमेश्वर का केन्द्रीय विचार, दिव्य प्रकाशन की केन्द्रीय रेखा, और पवित्रशास्त्र की व्याख्या और समझ का एक नियंत्रित करने वाला सिद्धांत है:

1. उत्पत्ति 1 और 2 अपना दिव्य भवन पाने के लिए परमेश्वर के जैविक वास्तुशिल्पीय योजना की रूपरेखा है (इब्र. 11:10); परमेश्वर की चाह मसीह को हमारे आंतरिक गठन के भीतर निर्माण करना है ताकि हमारा सम्पूर्ण अस्तित्व मसीह से पुन: गठित हो जाए; इस तरह से परमेश्वर अपने स्वरूप में अपने आप को अभिव्यक्त करने के लिए और अपने अधिकार के साथ अपना प्रतिनिधित्व करने के लिए एक सामूहिक मनुष्य पा सकता है (उत. 1:26; 1 कुर. 3:9; मत. 16:18; 2 शम. 7:12-14अ)।
2. प्रकाशितवाक्य 21 और 22 पूर्ण भवन की तस्वीर हैं, जो त्रिएक परमेश्वर की सामूहिक अभिव्यक्ति है; नया यरूशलेम अदन वाटिका के विषय में दिव्य प्रकाशन का प्रतिबिंब और परिपूर्णता है।
3. मसीह अपनी दुल्हन से विवाह करने के लिए दूल्हे के रूप में वापस आएगा, जो जयवंतों की समग्रता होगी; जयवंतों द्वारा इस युग में यह निर्माण कार्य राज्य युग में नए यरूशलेम की प्रारम्भिक परिपूर्ति के लिए है (19:7-9) और अंतत: नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में नए यरूशलेम की पूर्ण परिपूर्ति के लिए है (21:2)।
4. सभी शताब्दियों से पवित्र आत्मा के निरंतर कार्य करने के माध्यम से, यह लक्ष्य इस युग के अंत तक हासिल कर दिया जाएगा; तब दुल्हन जयवन्त होते विश्वासी, तैयार होंगे, और परमेश्वर का राज्य आ जाएगा—मत. 26:29; 13:43।
5. सामूहिक दुल्हन, नया यरूशलेम, परमेश्वर के उद्देश्य के दो पहलुओं को पूरा करेगी (उत. 1:26); पहला, नया यरूशलेम परमेश्वर के पूर्ण स्वरूप में उसकी महिमा के लिए परमेश्वर की पूर्ण अभिव्यक्ति होगी (प्रक. 21:11; 4:3); दूसरा, यह नया यरूशलेम शत्रु को वश में करेगी, पृथ्वी को जीतेगी, और सम्पूर्ण ब्रह्मांड के ऊपर परमेश्वर के आधिपत्य के साथ उसके अधिकार का अभ्यास करेगी (उत. 1:26; प्रक. 22:5; प्रसं. 20:10, 14-15)।

C. जब हम परमेश्वर के लोगों के रूप में परमेश्वर के साथ प्रेम संबंध में प्रवेश करते हैं, तो हम उसका जीवन प्राप्त करते हैं, जिस प्रकार हव्वा ने आदम का जीवन प्राप्त किया; यह यही जीवन है कि जो हमें परमेश्वर के साथ एक बनने के लिए सक्षम करता है और उसे हमारे साथ एक बनाता है—उत. 2:21-22।

II. परमेश्वर और उसके लोगों का एक होने के लिए, उनके बीच में एक पारस्परिक प्रेम होना जरूरी है; बाइबल में प्रकट परमेश्वर और उसके लोगों के बीच का प्रेम मुख्य रूप से एक पुरुष और एक स्त्री के बीच के स्नेहमय प्रेम के समान है—यूह. 14:21, 23; यिर्म. 2:2; 31:3:

A. जैसे परमेश्वर के लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं और उसके साथ उसके वचन में संगति के लिए समय व्यतीत करते हैं, तो परमेश्वर उन्हें अपने दिव्य तत्व से भरता है, उन्हें अपने जीवनसाथी के रूप में अपने साथ एक बनाता है, ठीक वैसे ही जैसे वह जीवन, स्वभाव, और अभिव्यक्ति में है—भज. 119:140, 15-16।

B. परमेश्वर ने पहले हमसे प्रेम किया जिसमें उसने हमें अपने प्रेम से भरा और हमारे भीतर वो प्रेम उत्पन्न किया जिससे हम उसे और भाइयों को प्रेम करते हैं—1 यूह. 4:19-21।

C. वह जीवन जिसे हमने परमेश्वर की ओर से ग्रहण किया है एक प्रेम का जीवन है; मसीह ने इस संसार में प्रेम के रूप में परमेश्वर का जीवन जिया, और वह अब हमारा जीवन है ताकि हम इस संसार में प्रेम का वही जीवन जी सकें और ठीक वैसे ही हो सकें जैसा वह है—3:14; 5:1; 2:5-6; 4:17।

D. हमारा स्वाभाविक प्रेम क्रूस पर रखा जाना जरूरी है; परमेश्वर के प्रेम और हमारे स्वाभाविक प्रेम में एक अंतर यह है कि हमारे स्वाभाविक प्रेम को ठेस पहुंचाना बहुत आसान है।

E. हमें ऐसे व्यक्ति होना चाहिए जो मसीह के प्रेम से पूरी तरह भर जाएँ और उसके द्वारा बहा ले जाएँ; दिव्य प्रेम हमारी ओर बड़े जल के तेजी से बहते हुए ज्वार की तरह होना चाहिए, जो हमें अपने नियंत्रण से बाहर होकर उसके लिए जीने के लिए प्रेरित करे—2 कुर. 5:14

F. भाईचारे के प्रेम के संबंध में आज्ञा पुरानी और नई दोनों है: पुरानी: क्योंकि विश्वासियों के पास यह उनके मसीही जीवन की शुरूआत से रही है; नई, क्योंकि उनकी मसीही चाल में यह नई ज्योति के साथ शुरू होता है और बार-बार नई प्रबुद्धता और ताजी शक्ति के साथ चमकता है—1 यूह. 2:7-8; 3:11, 23; यूह. 13:34।

G. देह मसीह की दुल्हन बनने के लिए अपने आपको प्रेम में निर्मित करती है (इफ. 4:16); हमारी परमेश्वर-प्रदत्त पुनरुज्जीवित आत्मा प्रेम की एक आत्मा है; हमें आज की कलीसिया की दुर्गति पर विजय पाने के लिए एक ज्वलंत आत्मा की जरूरत है (2 तीम. 1:7)।

H. "ज्ञान घमंड उत्पन्न करता है, परन्तु प्रेम से उन्नति होती है" (1 कुर. 8:1ब; 2 कुर. 3:6); एक दूसरे से प्रेम करना एक चिह्न है कि हम मसीह के हैं (यूह. 13:34-35); कलीसिया में प्रेम करना प्रथम बनाम सभी भाइयों को प्रेम करना है (3 यूह. 9)।

I. जिस प्रकार प्रभु यीशु ने अपने प्राण जीवन को दे दिया ताकि हमारे पास दिव्य जीवन हो सके, हमें अपने प्राण जीवन को खोने और भाइयों को प्रेम करने के लिए स्वयं को इनकार करने की जरूरत है और मसीह की दुल्हन की तैयारी के लिए देह जीवन के अभ्यास में उनको जीवन की सेवकाई करने की जरूरत है—1 यूह. 3:16; 4:17 और पादटिप्पणी 5; यूह. 10:11, 17-18; 15;13; इफ. 4;29 —5:2; 2 कुर. 12:15; रो. 12;9-13।

J. प्रेम हमारे लिए मसीह की जैविक देह के रूप में कलीसिया के निर्माण के लिए कुछ भी होने और कुछ भी करने के लिए सबसे उत्तम मार्ग है—1 कुर. 12:31ब—13:8ब।

III. हमें वो देखने की जरूरत है जो परमेश्वर ने किया जिससे कि अपने आपके लिए एक अर्धांगिनी उत्पन्न कर सकें; उत्पत्ति 2 आदम और हव्वा के प्ररूप में मसीह और उसकी दुल्हन की एक तस्वीर प्रकट करता है:

A. आदम मसीह में वास्तविक, सार्वभौमिक पति के रूप में परमेश्वर को प्ररूपित करता है, जो अपने आपके लिए एक पत्नी खोज रहा है—रो. 5:14; प्रसं. यूह. 3:29; 2 कुर. 11:2; इफ. 5:31-32; प्रक. 19:7-9; 21:9-21।

B. "फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं; मैं उसके लिये एक ऐसा सहायक बनाऊंगा जो उससे मेल खाए"—उत. 2:18:

1. आदम के लिए एक पत्नी जरूरत अपने गृहप्रबंध में अपने अर्धांगिनी, अपनी पूरक (अक्षरस. उसकी समरूप) के रूप में एक पत्नी पाने के लिए परमेश्वर की जरूरत को प्ररूपित और चित्रित करती है; यधपि परमेश्वर, मसीह, पूर्ण रूप से और अनंत रूप से सिद्ध है, वह अपनी पत्नी के रूप में कलीसिया के बिना पूरा नहीं है।
2. परमेश्वर दोनों को पाने की चाह रखता है, आदम, जो मसीह को सूचित करता है, और हव्वा, जो कलीसिया को सूचित करती है; उसका उद्देश्य "उनको आधिपत्य करने देना" है (1:26); यह एक विजयी मसीह प्लस एक विजयी कलीसिया पाना है, एक मसीह जिसने दुष्ट के कार्य पर जीत पाई है प्लस एक कलीसिया जिसने दुष्ट के कार्य को पलट दिया है; परमेश्वर चाहता है कि मसीह और कलीसिया आधिपत्य करें (रो. 5:17; 16:20; इफ. 1:22-23)।

C. भूमि से परमेश्वर ने खेत के प्रत्येक जन्तु और आकाश के प्रत्येक पक्षी को बनाया और उन्हें आदम के पास लाया, "और आदम ने सब जाति के घरेलू पशुओं, और आकाश के पक्षियों, और सब जाति के बनैले पशुओं के नाम रखे; परन्तु आदम के लिये कोई ऐसा सहायक न मिला जो उससे मेल खा सके"—उत. 2:19-20।

D. पत्नी को ठीक वैसे ही होना जरूरी है जैसा की जीवन, स्वभाव, और अभिव्यक्ति में पति होता है; पशुओं, पक्षियों, जानवरों में आदम को अपने लिए एक भी पूरक नहीं मिला, वह जो उससे मेल कहा सकता था—आ. 23।

E. अपने आपके लिए एक पूरक उत्पन्न करने के लिए, परमेश्वर पहले एक मनुष्य बना, जैसा कि परमेश्वर का आदम की सृष्टि करने के द्वारा प्ररूपित किया गया है—यूह. 1:14; रो. 5:14।

F. "तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को गहरी नींद में डाल दिया, और जब वह सो गया तब उसने उसकी एक पसली निकाल कर उसकी जगह मांस भर दिया।"—उत. 2:21:

1. अपनी पत्नी के रूप में हव्वा को उत्पन्न करने के लिए आदम की गहरी नींद अपनी अर्धांगिनी के रूप में कलीसिया को उत्पन्न करने के लिए क्रूस पर मसीह की मृत्यु को प्ररूपित करती है—इफ. 5:25-27।
2. बाइबल में, नींद का मतलब मृत्यु होता है—1 कुर. 15:18; 1 थिस. 4:13-16; यूह. 11:11-14।
3. मसीह की मृत्यु जीवन-मुक्त करने वाली, जीवन-प्रदानक, जीवन-प्रचारक, जीवन-गुणक, और जीवन-उत्पन्न करने वाली मृत्यु है, जिसे उस गेंहूँ के दाने के द्वारा प्ररूपित किया गया है जो मरने और उगने के लिए भूमि पर गिरा जिससे कि कई दाने उत्पन्न कर सके (12:24) रोटी बनाने के लिए जो देह, कलीसिया है (1 कुर. 10:17)।
4. मसीह की मृत्यु के माध्यम से उसके भीतर का दिव्य जीवन मुक्त किया गया, और उसके पुनरूत्थान के माध्यम से उसका मुक्त किया गया दिव्य जीवन कलीसिया को गठित करने के लिए उसके विश्वासियों के भीतर प्रदान किया गया—लूक. 12:49-50; रो. 12:11; प्रक. 4:5।
5. एक ऐसी प्रक्रिया के माध्यम से मसीह में परमेश्वर मनुष्य के भीतर परमेश्वर के जीवन और स्वभाव के साथ गढ़ा गया ताकि मनुष्य ठीक वैसा हो सके जैसा कि जीवन और स्वभाव में परमेश्वर है जिससे कि उसकी अर्धांगिनी के रूप में उससे मेल खा सके।

G. "और यहोवा परमेश्वर ने उस पसली को जो उसने आदम में से निकाली थी, स्त्री बना दिया; और उसको आदम के पास ले आया"—उत. 2:22:
1. आदम की खुली बगल से ली गई पसली मसीह के अटूट, अविनाशी अनंत जीवन को प्ररूपित करती है (इब्र. 7:16; यूह. 19:32-33, 36; निर्ग. 12:46; भज. 34:20), जो उसकी बेधी हुई बगल से बहा (यूह. 19:34) अपनी अर्धांगिनी के रूप में कलीसिया को उत्पन्न करने और निर्माण करने के लिए अपने विश्वासियों को जीवन प्रदान करने के लिए:
   a. मसीह की बगल से लहू और पानी बहा, परन्तु सब जो आदम की बगल से बाहर आया वो बिना लहू के पसली थी।
   b. यह इसलिए क्योंकि आदम के समय पर लहू के माध्यम से छुटकारे की कोई जरूरत नहीं थी, क्योंकि वहाँ कोई पाप नहीं था; जिस समय तक मसीह क्रूस पर "सो रहा" था, तो वहाँ पाप की समस्या थी; इस प्रकार, जो लहू मसीह की बगल से निकला वो हमारे न्यायिक छुटकारे के लिए था।
   c. लहू के बाद, पानी बाहर आया, जो हमारे जैविक उद्धार के लिए परमेश्वर का बहता हुआ जीवन है (निर्ग. 17:6; 1 कुर. 10:4; गिन. 20:8); यह दिव्य, बहता हुआ, अनसृजा जीवन आदम की बगल से ली गई पसली के द्वारा प्ररूपित किया गया है (रो. 5:10)।
2. उत्पत्ति 2:22 यह नहीं कहता है कि हव्वा को सृजा गया बल्कि उसे निर्मित किया गया; आदम की बगल से ली गई पसली से हव्वा का निर्माण क्रूस पर मसीह की मृत्यु के माध्यम से उसकी ओर से मुक्त किए गए पुनरूत्थित जीवन के साथ कलीसिया का निर्माण करने को प्ररूपित करता है जिसे उसके विश्वासियों के भीतर उसके पुनरूत्थान में प्रदान किया गया—यूह. 12:24; 1 पत. 1:3।
3. वास्तविक हव्वा के रूप में कलीसिया मसीह के सभी विश्वासियों में उसकी समग्रता है; कलीसिया मसीह का पुनरूत्पादन है; मसीह के तत्व के अलावा, कलीसिया में कोई अन्य तत्व नहीं चाहिए—उत. 5:2।

H. केवल वही जो मसीह से उसके पुनरूत्थान जीवन से आता है उसकी दुल्हन के रूप में उसका पूरक हो सकता है (1 कुर. 12:12; इफ. 2:6; 5:28-30); कलीसिया मसीह से निकला शुद्ध उत्पाद है; कलीसिया "मसीहमय," "पुनरूत्थाननीय," और स्वर्गीय है।

I. आदम और हव्वा, जो एक हैं, ने पति और पत्नी के रूप में एकसाथ एक वैवाहिक जीवन जिया (उत. 2:24-25); यह चित्रित करता है कि नए यरूशलेम में प्रक्रियाकृत और परिपूर्ण त्रिएक परमेश्वर सार्वभौमिक पति के रूप में छुड़ाए गए, पुनरूजीवित किए गए, रूपांतरित और महिमान्वित मानवता के साथ पत्नी के रूप में सदैव एक वैवाहिक जीवन जिएगा (प्रक. 22:17अ)।

J. अनंतता, जो बिना अंत का है उसमें दिव्य, अनंत, और अत्यधिक महिमामय जीवन के द्वारा, वे एक ऐसा जीवन जीयेंगे जो एक आत्मा के रूप में परमेश्वर और मनुष्य का मिश्रित होना है, एक ऐसा जीवन जो सर्वोत्तम है और जो आशीषों और आनंद से उमड़ता है।